❍ 26 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *"मेरा तो एक शिव बाबा... दूसरा न कोई" - यह अनुभव किया ?*

➢➢ *मेरा मेरा के ग्रहण से मुक्त रहे ?*

➢➢ *ब्राह्मण जीवन में सदा सुख का अनुभव किया ?*

➢➢ *अपनी वृत्ति को पावरफुल बनाया ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अन्त:वाहक स्थिति अर्थात् कर्मबन्धन मुक्त कर्मातीत स्थिति का वाहन अर्थात् अन्तिम वाहन, जिस द्वारा ही सेकण्ड में साथ में उड़ेंगे।* इसके लिए सर्व हदों से पार बेहद स्वरूप में, बेहद के सेवाधारी, सर्व हदों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाले विजयी रत्न बनो तब ही अन्तिम कर्मातीत स्वरूप के अनुभवी स्वरूप बनेंगे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

———————————————

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✺ *"मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ"*

〰✧ स्वयं को स्वराज्य अधिकारी, राजयोगी श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? स्वराज्य मिला है वा मिलना है? स्वराज्य अधिकारी अर्थात् राजयोगी आत्मा सदा ही स्वराज्य की अधिकारी होने के कारण शक्तिशाली है। राजा अर्थात् शक्तिशाली। अगर राजा हो और निर्बल हो, तो शक्तिहीन को राजा कौन मानेगा? प्रजा उनके ऊपर और ही राज्य करेगी। *तो स्वराज्य अधिकारी अर्थात् सदा शक्तिशाली आत्मा ही कर्मेन्द्रियों पर अर्थात् अपने कर्मचारियों के ऊपर राज्य कर सकती है, जैसे चाहे चला सकती है। नहीं तो प्रजा, राजा को चलायेगी। प्रजा, राजा को चलाये तो प्रजा ही राजा हो गई ना।*

〰✧ नियम प्रमाण राजा, प्रजा को चलाता है। अगर प्रजा का राज्य है तो राजा नहीं कहेंगे, प्रजा का प्रजा पर राज्य कहेंगे। किन्तु बाप आकर राजयोगी बनाता है, प्रजा का प्रजा पर राज्य नहीं सिखाता है। तो सभी राज्य अधिकारी हो ना? कभी अधीन, कभी अधिकारी - ऐसे तो नहीं? *सदा अधिकारी, एक भी कर्मेन्द्रिय धोखा न दे। इसको कहते हैं - 'राजयोगी वा राज्य अधिकारी'। तो सदा इस स्वमान में स्थित रहो कि हम अधिकारी हैं, अधीन होने वाले नहीं! यह है ईश्वरीय नशा।* यह नशा सदा रहता है या कभी-कभी? कभी है, कभी नहीं - ऐसा न हो।

〰✧ क्योंकि अभी के संस्कार अनेक जन्म चलेंगे। अगर अभी के संस्कार सदा

के नहीं हैं, कभी-कभी के हैं, तो अनेक जन्म में भी कभी-कभी राज्य अधिकारी बनेंगे। सदा राज्य अधिकारी अर्थात् रॉयल फैमिली के नजदीक रहने वाले। तो संस्कार भरने का समय अभी है, जैसा भरेंगे वैसा चलता रहेगा। तो अटेन्शन किस समय देना होता? जब रिकार्ड भरते वा टेप भरते हैं। तो अटेन्शन भरने के समय देते हैं। *चलने के समय तो चलता ही रहेगा लेकिन भरने के समय जैसा भरेंगे वैसे चलता रहेगा। तो भरने का समय अभी है। अभी नहीं तो कभी नहीं। फिर अटेन्शन देना चाहो तो भी नहीं दे सकेगे क्योंकि भरने का समय समाप्त हो जायेगा। फिर जो भरा वह चलता रहेगा।*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

────────────────────────

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

〰✧ बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि कई बच्चे परखने में बहुत होशियार होते हैं। कोई भी गलती होती है, जो नीति प्रमाण नहीं है, तो समझते हैं कि यह नहीं करना चाहिए, यह सत्य नहीं है, यथार्थ नहीं है, अयथार्थ है, व्यर्थ है। *लेकिन समझते हुए फिर भी करते रहते या कर लेते।*

〰✧ तो इसको क्या कहेंगे? कौन-सी पॉवर की कमी है? *कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं।* जैसे आजकल कार चलाते हैं, देख भी रहे हैं कि एक्सीडेन्ट होने की सम्भावना है, ब्रेक लगाने की कोशिश करते हैं, लेकिन ब्रेक लगे ही नहीं तो जरूर एक्सीडेन्ट होगा ना।

〰✧ ब्रेक है लेकिन पॉवरफुल नहीं है और यहाँ के बजाए वहाँ लग गई, तो भी क्या होगा? इतना समय तो परवश होगा ना चाहते हुए भी कर नहीं पाते। *ब्रेक लगा नहीं सकते या ब्रेक पॉवरफुल न होने के कारण ठीक लग नहीं सकती। तो यह चेक करो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आप ग्रेट-ग्रेट-ग्रैण्ड फादर के बच्चे हैं, आपके ही सभी बिरादरी हैं, शाखायें हैं, परिवार है, आप ही भक्तों के इष्टदेव हो, यह नशा है कि हम ही इष्टदेव हैं? तो भक्त चिल्ला रहे हैं, आप सुन रहे हो! *वह पुकार रहे हैं- हे इष्ट देव, आप सिर्फ सुन रहे हो, रेसपाण्ड नहीं करते हो उन्हों को? तो बापदादा कहते हैं हे भक्तों के इष्ट देव अभी पुकार सुनो, रेसपाण्ड दो, सिर्फ सुनो नहीं। तो क्या रेसपाण्ड देगे? परिवर्तन का वायुमण्डल बनाओ।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- शिव वंशी ब्रह्मा मुख वंशावली, ब्राह्मण के नशे में रहना"*

➳ _ ➳ मधुबन घर में डायमण्ड हाल में अपने शिव पिता को निहार कर मै आत्मा.. घनेरे सुखो में खो जाती हूँ... सम्मुख बेठे भगवान को देख, ख़ुशी में बावरी हो रही हूँ... *मन ही मन मीठे बाबा को प्यार कर रही हूँ... दुलार कर रही हूँ... ख़ुशी के अंसुवन से, दिल के भावो को, बयान कर रही हूँ.*.. मेरे लिए धरती पर उतर आया है भगवान... मुझे संवारने, निखारने और देवताई शानो शौकत से सजाने... यह सोच सोचकर निहाल हुई जा रही हूँ... *कितना दूर दूर ढूंढ रही थी.. इस मीठे भगवान् को... और मीठे बच्चे की आवाज सुनकर, जो मुड़कर निहारा... तो भगवान को अपने सम्मुख खड़ा पाया.*.. अपने इस मीठे भाग्य को देख देख पुलकित हूँ... जिसने यूँ चुटकियो में मुझे भगवान से मिला दिया... मुझे क्या से क्या बना दिया...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा के महान भाग्य का नशा दिलाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... आपका भाग्य कितना प्यारा और महान है कि... परमधाम से स्वयं भगवान ने आकर आपको चुना है... *अपनी मखमली गोद में बिठाकर, फूलो जैसा खिलाया है... अथाह ज्ञान रत्नों से सजाकर, पूरे विश्व में अनोखा बनाया है.*.. अपने इस खुबसूरत भाग्य के नशे में रहकर... पुरुषार्थ के शिखर पर पहुंचकर मीठा सा मुस्कराओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को अपनी बाँहों में भरकर गले लगाती हुए कहती हूँ :-* "प्यारे प्यारे बाबा मेरे... आप जो जीवन में न थे बाबा तो यह जीवन दुखो की गठरी सा बोझिल था... मै अकेली किस कदर इसे उठाकर टूट गयी थी... *आपने मीठे बाबा मेरे जीवन में आकर, गणो की खशब से

महके...सुख भरे फूल खिलाये है.*.. मुझे अपना प्यारा बच्चा बनाकर मेरा सोया हुआ भाग्य जगा दिया है...

❊ *प्यारे बाबा ने मुझे ज्ञान रत्नों से सजाकर विश्व की बादशाही देते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... सदा अपने मीठे भाग्य की यादो में रहकर मीठे बाबा को याद करो... *सोचो जरा, कितना शानदार भाग्य है कि शिव पिता और ब्रह्मा मां... जीवन को नये आयामो से सजाने के लिए मिली है.*.. देह की मिटटी से उठकर, ईश्वरीय दिल में बस गए हो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपनी खुशनसीबी पर झूमते गाते हुए मीठे बाबा को गले लगाकर कहती हूँ ;-* "मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा *अपने इस अनोखे भाग्य पर कितना ना इठलाऊँ झूमूँ, नाचू और मुस्कराऊ.*.. कि भगवान को पाकर खुबसूरत देवता बन रही हूँ... गुणो और शक्तियो से सजधज कर विश्व की मालिक बन रही हूँ...

❊ *मीठे बाबा मुझे अपने दिल में बसाकर, अप्रतिम सौंदर्य से सजाकर कहते है :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... ईश्वर पिता को पा लेने की सच्ची खुशियो में सदा, सदा मुस्कराओ... अपने प्यारे भाग्य के गीत गाकर, मीठे बाबा की प्यारी प्यारी यादो में खो जाओ... *शिव शिल्पकार पिता और ब्रह्मा सी माँ मिलकर देवताई सौंदर्य में ढाल रहे है... पावनता से भरकर विश्व का बादशाह बना रहे है.*.. सदा इस मीठी खुमारी में खोये रहो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की श्रीमत पर चलकर जीवन को खुबसूरत बनाते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे साथी मेरे... मै आत्मा आपकी यादो के साये में गुणो और शक्तियो से भरपूर होकर... सतयुगी दुनिया की हकदार बन रही हूँ... *शिव पिता और ब्रह्मा माँ का हाथ थामकर खुशियो की बगिया में घूम रही हूँ... साधारण मनुष्य से ऊँचा उठकर, खुबसूरत देवता बन रही हूँ..*."प्यारे बाबा से असीम प्यार पाकर मै आत्मा... इस देह के भृकुटि सिहांसन पर लौट आयी...

———————————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- ✺ मेरा - मेरा छोड़ ग्रहण से मुक्त होना है*"

➳ _ ➳ अपने मीठे बाबा की मीठी याद में बैठी एक बहुत ही सुंदर दृश्य मैं देख रही हूँ जिसे देख कर मेरा रोम - रोम आनन्दमयी हो रहा है। *मैं देख रही हूँ जिस देह और देह की दुनिया मे मैं रहती हूँ वह देह और देह की दुनिया जैसे निराकारी आत्माओं की दुनिया मे परिवर्तित हो रही है*। सभी के साकारी शरीर जैसे लुप्त होते जा रहें हैं। एक भी मनुष्य मुझे दिखाई नही दे रहा। चारों और केवल चमकती हुई ज्योति बिंदु आत्मायें निराकार शिव बाबा की छत्रछाया के नीचे दिखाई दे रही हैं।

➳ _ ➳ बाबा की अनन्त शक्तियाँ सभी आत्माओं पर पड़ रही है और बाबा की सर्वशक्तियाँ पा कर सभी आत्मायें जगमग करते हुए सितारों की भांति चमक रही हैं। *सर्वशक्तियों का एक शक्तिशाली पुंज दीप राज के रूप में और उसके सामने असंख्य जगमग करते चैतन्य दीपक शोभायमान हो रहें हैं*। ऐसा लग रहा है जैसे कोई चैतन्य दीपमाला जग रही है। इस अद्भुत दृश्य को देख मन को असीम सुकून की अनुभूति हो रही है। अपने शिव बाबा की सर्वशक्तियों की छत्रछाया में सभी असीम आनन्द की अनुभूति कर रहें हैं।

➳ _ ➳ असीम आनन्द की अनुभूति करके अब हर आत्मा फिर से अपना देह रूपी वस्त्र धारण कर रही है। और जैसे ही देह में प्रवेश करती है माया रावण अपने अति लुभावने रूप में उसे अपनी और आकर्षित करके उस दिव्य अलौकिक आनन्द की अनुभूति को भुला देती है। *अब मैं देख रही हूँ फिर से साकारी दुनिया मे साकारी मनुष्यों को जिनके ऊपर माया रावण की परछाया पड़ चुकी है। माया रावण ने देह अभिमान के रुप में सभी को "मैं और मेरा" का ग्रहण लगा दिया है*। सभी के अंदर पांच विकारों रूपी रावण की प्रवेशता हो गई है। "मैं और मेरा" के ग्रहण ने सभी को अभिशापित करके विकर्मी बना दिया है। देह अभिमान में आ कर सभी विकर्म कर रहें है और दुख पा रहें हैं।

➳ _ ➳ पतित दुनिया के इस दुखमय दृश्य को देखते देखते एकाएक मैं देखती हूँ कि धीरे - धीरे परमधाम से ज्ञानसूर्य शिवबाबा अपनी शक्तिशाली किरणों को बिखेरते हुए नीचे आ रहें हैं। *सूक्ष्म लोक में पहुंच कर, शिवबाबा अपने आकारी रथ, ब्रह्मा बाबा की भृकुटि पर विराजमान हो कर, साकारी दुनिया में प्रवेश करते हैं*। मैं देख रही हूँ पूरी दुनिया में ज्ञान सूर्य की शक्तिशाली किरणे धीरे - धीरे चारों ओर फैलने लगी है। शिव बाबा ब्रह्मा मुख से सभी को "मैं और मेरा" के इस ग्रहण से मुक्त होने का उपाय बता रहें हैं। सभी को उनका और अपना वास्तविक परिचय दे कर, उन्हें उनके वास्तविक गुणों की स्मृति दिला रहें हैं।

➳ _ ➳ अब मैं देख रही हूँ जो निश्चयबुद्धि बन, ज्ञानसूर्य शिव बाबा के इस दिव्य ज्ञान को सुन, उनकी समझानी पर चल रहें हैं वो "मैं और मेरा" के ग्रहण से मुक्त होते जा रहें हैं। किन्तु *जो संशय बुद्धि हैं और भगवान की मत के अनुसार नही चल रहे। वो पांच विकारों के इस ग्रहण के शिकंजे में और ज्यादा फंस कर दुखी, अशांत हो रहें हैं*। इस दृश्य को देखते - देखते मैं अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की सराहना करती हूँ जो स्वयं भगवान ने आ कर मुझ आत्मा पर लगे ग्रहण से मुझे मुक्त कर सदा के लिए सुखदाई बनने का सहज रास्ता बता दिया।

➳ _ ➳ *अपने भगवान बाप का दिल से शुक्रिया अदा करते हुए, अपने ब्राह्मण स्वरूप में रहते , निरन्तर बाबा की याद से अब "मैं और मेरा" को छोड़ पांच विकारों के ग्रहण से मुक्त होने का पुरुषार्थ मैं निरन्तर कर रही हूँ*। पांच विकारों रूपी ग्रहण ने जो मुझ आत्मा को काला बना दिया था, उन विकारों की कट को योग अग्नि से भस्म कर अब मैं रीयल गोल्ड बन रही हूँ।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं ब्राह्मण जीवन मे सदा सुख का अनुभव करने वाली मायाजीत आत्मा हूँ।*
✺ *मैं क्रोधमुक्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव अपनी वृत्ति को पावरफुल बनाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा अपनी वृत्ति से अनेक आत्माओं को योग्य और योगी बनाती हूँ ।*
✺ *मैं सच्ची सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ ब्राह्मणों का काम क्या है? योग लगाना भी क्या है? मेहनत है क्या? योग का अर्थ ही है आत्मा और परमात्मा का मिलन। तो *मिलन में क्या होता है? खुशी में नाचते हैं। बाप की महिमा के मीठे-मीठे गीत दिल आटोमेटिक गाती है। ब्राह्मणों का काम ही यह है, गाते रहो और नाचते रहो।* यह मुश्किल है? नाचना गाना मश्किल है? नहीं है ना। जिसको मश्किल लगता है वह हाथ

उठाओ। आजकल तो नाचने गाने की सीजन है, तो आपको भी क्या करना है? नाचो, गाओ। सहज है ना? सहज है तो काँध तो हिलाओ। मुश्किल तो नहीं है ना?

➳ _ ➳ जान-बूझ कर सहज से हटकर मुश्किल में चले जाते हो। मुश्किल है नहीं, बहुत सहज है क्योंकि बाप जानते हैं कि आधाकल्प मुश्किल की जीवन व्यतीत की है इसलिए इस समय सहज है। मुश्किल वाला कोई है? कभी-कभी मुश्किल लगता है? जैसे कोई चलते- चलते रास्ता भूलकर और रास्ते में चला जाए तो मुश्किल लगेगा ना। ज्ञान का मार्ग मुश्किल नहीं है। ब्राह्मण जीवन मुश्किल नहीं है! *ब्राह्मण के बजाए क्षत्रिय बन जाते हो तो क्षत्रिय का काम ही होता है लड़ना, झगड़ना... वह तो मुश्किल ही होगा ना! युद्ध करना तो मुश्किल होता है, मौज मनाना सहज होता है।*

✺ *ड्रिल :- "ब्राह्मण जीवन में नाचते, गाते रह सहज मौज मनाने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा *झील के किनारे बैठ सूर्योदय के सुंदर नजारे का आनंद ले रही हूँ*... पानी की कल-कल ध्वनि... समूचे वातावरण में गुंजायमान हो रही है... पक्षियों का कलरव सर्वत्र मधुर संगीत घोल रहा है... मैं आत्मा उगते हुए सूर्य को देख रही हूँ... उगते हुए सूर्य की अरुणिमा से जैसे प्रकृति भी सुनहरी लाल चादर ओढ़ी हुई प्रतीत हो रही है... *प्रकृति की इस सुंदर छवि को देख मेरा मन आनंद विभोर हो रहा है*...

➳ _ ➳ सहसा वह गीत याद आ जाता है- 'जिसकी रचना इतनी सुंदर वह कितना सुंदर होगा...' इस स्मृति मात्र से ही *मन दर्पण में प्यारे शिवबाबा का सुंदर सलोना रूप छा जाता है... अपने प्रियतम की इस मोहिनी मूरत को निहारते-निहारते... मैं अपने बाबा को अपने बिल्कुल समीप ही देख रही हूँ*... मीठे बाबा अपनी स्नेह भरी दृष्टि से मुझे भरपूर कर रहे हैं... मेरा मन ईश्वरीय प्यार के झरने में भीगता जा रहा है... मेरे रोम-रोम से 'मेरा मीठा बाबा, मेरा प्यारा बाबा' का अनहद नाद सा गूँज रहा है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा मीठे बाबा से मिलन मना कर अति आनंदित हो रही हूँ... *मुख से वाह वाह के ही बोल निकल रहे हैं... कितना सुंदर है मेरा यह ब्राह्मण जीवन... मैं आत्मा बाबा के स्नेह में, अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूल रही हूँ*... परमात्मा की मोहब्बत में लीन होकर मैं हर प्रकार की मेहनत से मुक्त हो रही हूँ... योग लगाना नहीं पड़ता, मेहनत करनी नहीं पड़ती मेरा मन, मिलन के असीम सुख का अनुभव करने के लिए... स्वत: ही बाबा की मधुर स्मृतियों में समाया रहता है...

➳ _ ➳ परमात्मा से मिलन मनाते हुए मन मयूर खुशी में नाच रहा है... इस स्नेह में डूबकर आत्मा बाबा की महिमा के मीठे-मीठे गीत गुनगुना रही है... मेरे मीठे बाबा ने मुझे हर मेहनत से छुड़ा दिया है... अब मैं आत्मा अपने श्रेष्ठ भाग्य के और प्यारे बाबा की महिमा के गीत गुनगुनाती रहती हूँ... और हर पल खुशी की रास मना रही हूँ... *मुझ अति भाग्यवान श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा का काम ही है सदा ख़ुशी में नाचना और गाते रहना... बाबा ने मेरा यह ब्राह्मण जीवन कैसे मौजों से, आनंद से, खुशियों से भर दिया है*...

➳ _ ➳ आधाकल्प मैं आत्मा भक्ति के विविध प्रपंचों में पड़ कर अनेक कष्ट भोगती रही... जैसे कोई पथिक रास्ता भटक जाता है तो उसे कितनी परेशानी होती है... बाबा ने मुझ ब्राह्मण आत्मा के सहज कर्तव्य, सहज धर्म की स्मृति दिलाई है... *अब मैं आत्मा इस सुंदर ब्राह्मण जीवन में क्षत्रिय समान युद्ध नहीं करती हूँ... मैं आत्मा बाबा के बताए सहज मार्ग पर चलते हुए स्वयं को एक के लव में लवलीन कर रही हूँ... सदा ख़ुशी में नाचते, गाते सहज मौज का अनुभव कर रही हूँ*... 'पाना था सो पा लिया' के सुंदर अनुभवों में मगन हो रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔